VIDEHA · MONOGRAPH SERIES

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३३

मिथिला, वज्जि आ अंगक राजनीतिक इतिहास

प्रागैतिहास सँ समकालीन काल धरि
प्रमाणाधारित अध्ययन

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३३

मिथिला, वज्जि आ अंगक राजनीतिक इतिहासक प्रमाणाधारित आलोचना

History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal From Prehistory to the Contemporary Period

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

अध्याय १-२८क स्वतंत्र अध्ययन

प्रकाशन-सन्दर्भ : विदेह, २०२६

प्रकाशन-विवरण

मूल पुस्तक : History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal — From Prehistory to the Contemporary Period, General and Political History। लेखक : Gajendra Thakur।
मूल प्रकाशित Word प्रति अनुसार वर्ष २०२६।

सम्पादकीय शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय। समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार। विदेह, प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (ISSN 2229-547X)।

अधिकार-सम्बन्धी मूल संदर्भ : © Gajendra Thakur / Preeti Thakur, 2026 (मूल पुस्तकमे उपलब्ध विवरण)। सम्पादकीय समीक्षा आ मूल लेखकक अधिकार अलग-अलग मानल जाएत।

प्रमाण-सूचना : ई पुस्तक मूल Wordक पाठाधारित समालोचना अछि; बाह्य पुरातात्त्विक, अभिलेखीय आ समसामयिक सरकारी मूल स्रोतक सर्वांग स्वतंत्र प्रमाणीकरणक प्रतिवेदन नहि।

अनुक्रमणिका

मूल ग्रन्थक २८ अध्याय — २८ स्वतंत्र समीक्षा; शीर्षकक मूल अंग्रेजी स्वरूप सुरक्षित।

१ Region, rivers, names, and method 7

२ Archaeology and early food production 8

३ Late prehistoric and early iron-using horizons 9

४ Environment, mobility, and settlement 10

५ Videha in Vedic and Upanishadic textual worlds 11

६ Janaka, Sita, and the discipline of reading tradition 12

७ Vajji, the Licchavis, and Vaishali 13

८ Anga, Champa, and the Magadhan horizon 14

९ Buddhism, Jainism, and eastern Gangetic religious change 15

१० Empires, inscriptions, and pilgrim itineraries 16

११ Licchavi Nepal and the problem of continuity 17

१२ Tirabhukti and the early-medieval regional order 18

१३ The Karnatas and Simraongarh 19

१४ Oiniwar rule, Sultanate power, and political transition 20

१५ Two Vidyāpatis: Maithili, Sanskrit learning, and law 21

१६ Mughal-era Tirhut, Anga, and early-modern institutions 22

१७ Company rule, Permanent Settlement, and Darbhanga Raj 23

१८ Agrarian society, markets, caste, and labour 24

१९ Rivers, calamity, transport, and the colonial state 25

२० Education, print, language, reform, and nationalism 26

२१ The Nepal Tarai, Rana rule, and the border to 1951 27

२२ Land reform, democracy, and changing regional power 28

२३ The India-Nepal borderland, migration, and exchange 29

२४ Maithili and Angika: language, literature, and recognition 30

२५ Mithila painting, gender, and the cultural economy 31

२६ The Kosi, floods, infrastructure, and environmental risk 32

२७ Madhesh, representation, and plural citizenship in Nepal 33

२८ Conclusions: connected histories without false unity 34

आमुख : इतिहास, स्रोत आ प्रमाणक विभाजन

मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास एकरेखीय राजवंश-पञ्जी नहि। नदीक प्रवाह, जनसमुदायक गतिशीलता, राज्यक विधिक अधिकार, धार्मिक आ साहित्यिक स्मृति तथा पुरातात्त्विक अवशेष अलग प्रकारक समय-बोध प्रस्तुत करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक एहि इतिहासग्रन्थक आलोचना करबाक पहिल आवश्यक शर्त ई अछि जे एकटा अध्यायक प्रतिज्ञाकेँ पूरा क्षेत्रक निर्विवाद इतिहासक दर्जा नहि देल जाए। मूल पुस्तकक आरम्भिक ‘Editorial and evidentiary note’ स्वयं एहने स्रोत-विवेकक आग्रह करैत अछि।

अध्याय १–४ क्षेत्रीय भूगोल, पुरातात्त्विक कालक्रम आ बसावट पर केन्द्रित अछि; ५–११ वैदिक विदेह, रामायण-परम्परा, वज्जि, अंग, बौद्ध-जैन संसार आ लिच्छवि नेपाल पर; १२–१६ तिरभुक्ति, कर्णाट, ओइनिवार आ आरम्भिक आधुनिक सत्ता पर; १७–२१ औपनिवेशिक राजस्व, परिवहन, शिक्षा आ नेपाल-तराई पर; २२–२८ आधुनिक भूमि-सुधार, सीमापार समाज, भाषा, कला, नदीक जोखिम आ मधेशक नागरिकता पर। ई विस्तृत विभागीकरण विषयक समृद्धि दैत अछि, मुदा प्रत्येक कालखण्डक स्रोत-गुणवत्ता समान नहि अछि।

समालोचनाक मूल प्रश्न ई अछि जे ग्रन्थकार कोन प्राथमिक साक्ष्य अपनबैत छथि, कोन विद्वानक व्याख्यासँ सहमति राखैत छथि आ कोन निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत छथि। शिलालेखक प्रशासनिक उद्घोषणा समाजक पूर्ण दिनचर्या नहि बतबैत; धार्मिक ग्रन्थक आख्यान विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि; औपनिवेशिक गजेटियर वर्गीकरणक सत्ताधारी दृष्टि व्यक्त कऽ सकैत अछि। एहने अन्तरो पाठालोचनाक आधार अछि।

विद्यापतिक दू स्वतंत्र ऐतिहासिक व्यक्तित्व आ श्रोत्रिय श्रेणीक लगभग १८००क काल-निर्धारण मूल पुस्तकक विशेष प्रतिज्ञासभमे अछि। वर्तमान अध्ययन एहि प्रतिज्ञाकेँ ‘ग्रन्थकारक प्रस्ताव’क रूपमे ग्रहण करैत अछि। हुनकर पक्षमे देल पाठ आ प्रमाणक समीक्षा करब एहि प्रतिज्ञाक सर्वमान्य

सिद्धि मानि लेबासँ अलग काज अछि। नव शोध, अभिलेख आ प्रतिपक्षक विश्वसनीय आधार भेटला पर पुनर्मूल्याङ्कन आवश्यक रहत।

एहि आलोचनामे प्रत्येक मूल अध्याय लेल स्वतंत्र प्रकरण अछि। मूल अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक ज्योंक-त्यों राखल गेल अछि; ओकर क्रमांक, Wordक प्रमाणयोग्य अनुच्छेद-सीमा आ किछु प्रमुख उपशीर्षकसँ सन्दर्भ-मार्ग उपलब्ध कराओल गेल अछि। पाठकेँ फेर सँ पढ़ि जाँचबाक सुविधा लेल ई पद्धति अपनाओल गेल अछि; स्रोतक नामक मात्र उल्लेख स्वतन्त्र सत्यापन नहि।

मूल ग्रन्थक मूल्यांकन साहित्यिक सौन्दर्यक एकल मापकपर नहि होयत। एहि ठाम कथा-निर्माण, विवरणक तार्किक क्रम, स्रोत-आलोचना, नक्शा आ सारिणीक विवेक, प्रमाणक कालगत उपयुक्तता, ऐतिहासिक अवधारणाक स्थिरता आ सामान्य पाठक लेल गद्यक पठनीयता सम्मिलित कसौटी अछि। ई सामान्य आ राजनीतिक इतिहास पर केन्द्रित खण्ड अछि; सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक इतिहासक स्वतंत्र मूल पुस्तकक समीक्षा अलग आगाँक खण्डमे अपेक्षित अछि।

अध्ययन १ · Region, rivers, names, and method

मूल अंग्रेजी अध्याय 1 | मूल Word अनुच्छेद 133–219

एहि पहिल अध्यायक सबसँ महत्त्वपूर्ण इतिहासलेखनात्मक निर्णय मिथिला, वज्जि आ अंगकेँ एकटा स्थिर देशक तीन नाम नहि मानब अछि। लेखक मिथिलाकेँ सांस्कृतिक-भाषिक क्षेत्र, वज्जिकेँ प्राचीन राजनीतिक संघ आ अंगकेँ चम्पा-गंगा क्षेत्रसँ जुड़ल राज्य-परम्पराक रूपमे अलग करैत छथि। नदी, नाम, बस्ती आ प्रशासनक भिन्न-भिन्न कालमानक उपयोग एतय विषयक वास्तविक जटिलता खोलैत अछि। एहि भेदकेँ सुरक्षित नहि राखला पर वर्तमान बिहार–नेपालक सीमा प्राचीन राज्यक्षेत्रपर आरोपित भऽ जायत, जकर ऐतिहासिक आधार उपलब्ध नहि अछि।

लेखकक प्रमाण-विभाजन खास ध्यानयोग्य अछि : उत्खननक स्तर वस्तुगत गतिविधि देखबैत अछि, अभिलेख शासनक दाबी, साहित्यिक पाठ सांस्कृतिक स्मृति आ औपनिवेशिक गजेटियर प्रशासनिक दृष्टि। ई स्रोत परस्पर पूरक भऽ सकैत अछि, मुदा एकटा स्रोत दोसरा प्रकारक प्रश्नक स्वतः उत्तर नहि दैत। ‘नाम बचल अछि, तेँ राजनीतिक सत्ता अविच्छिन्न छल’—एहि प्रकारक निष्कर्ष सँ बचबाक आग्रह इतिहास-पद्धतिक उपलब्धि अछि। विशेषतः नदीक गतिशीलता कारणेँ पुरान बस्तीक भौतिक चिह्न अनुपस्थित रहबकेँ मानव-बसावट अनुपस्थित रहबाक प्रमाण नहि मानल जा सकैत।

अध्यायक सीमा एहि अर्थमे अछि जे ई मुख्यतः कार्यपद्धतिक प्रतिज्ञा स्थापित करैत अछि; प्रत्येक भू-नामक प्राचीनतम प्रमाण, पुरान नक्शा आ उत्खनन-स्तरक स्वतंत्र समीक्षाक विस्तृत प्रदर्शन आगामी अध्यायमे होयबाक अछि। स्थानिक सम्बन्ध, पर्यावरण आ सीमापार गतिशीलताक प्रारूप उपयोगी छैक, तथापि नदीक निक्षेप-परिवर्तनसँ कोन बस्ती कखन सरकल तकर निर्णय मात्र क्षेत्रीय सामान्यीकरणसँ नहि होयत। पुस्तकक शेष अध्यायकेँ एहि आरम्भिक प्रमाण-अनुशासनपर परखब उचित रहत।

अध्ययन २ · Archaeology and early food production

मूल अंग्रेजी अध्याय 2 | मूल Word अनुच्छेद 220–307

प्रागैतिहासिक कृषि-विकासक इतिहास लिखैत लेखक चिराँदक पुरातात्त्विक सामग्रीकेँ मिथिलाक समस्त बसावटसँ एकरूप नहि बनबैत छथि। हड्डी, वनस्पति-अवशेष, मृद्भाण्ड, पाषाण-औजार आ कार्बन-तिथि अलग प्रकारक साक्ष्य अछि। चिराँदक स्थानीय स्तरसँ सम्पूर्ण उत्तर गंगा मैदानी क्षेत्रक सामाजिक रूपरेखा बनाबय लेल तुलनात्मक स्थल आ तिथिसंगत क्रम अनिवार्य अछि। कृषि आरम्भक एकटा निश्चित दिन वा एकहि समुदायक ‘सभ्यता-स्थापना’ खोजबाक बदला लेखक धीरोत्तर, बहुस्थानिक परिवर्तनक मॉडल प्रस्तुत करैत छथि।

एहि अध्यायमे उत्खननक इतिहास स्वयं प्रमाणक हिस्सा बनैत अछि—कुन स्तरसँ नमूना उठल, ओकर निक्षेप प्रभावित भेल वा नहि, किन उपकरणसँ परीक्षण भेल आ पश्चात् ओकर व्याख्या कोना बदलल। वनस्पति अथवा पशु-अवशेषक उपस्थितिसँ सीधा जाति, भाषा अथवा विशिष्ट लोकसमूहक नाम निर्धारित नहि भऽ सकैत। कृषि, आखेट आ माछमारी एकहि सामाजिक परिसरमे एक संग रहि सकैत अछि; ई सह-अस्तित्व रेखिक ‘शिकारसँ कृषक’ कथाक उचित प्रतिपक्ष अछि।

लेखकक निष्कर्ष शोधपरक छैक, मुदा चिराँदक प्रत्येक कालखण्डक प्रत्यक्ष स्तर-नमूना सारणी, प्रयोगशाला क्रमांक आ प्रकाशित उत्खनन-प्रतिवेदनक अलग मिलान बिना तिथि-शृंखलाक कठोर स्वतंत्र सत्यापन एतय सम्भव नहि। बिहारक एकाधिक स्थलपर अवशेष-संरक्षणक अन्तर सभकेँ समरूप मानि तुलना नहि कएल जएबाक चाही। एहि सीमाकेँ स्पष्ट मानब स्वयं अध्यायक शक्ति अछि, किएक तँ स्रोतक असमानताकेँ सामाजिक रिक्तता कहि देब प्रागैतिहासिक अध्ययनक प्रमुख जोखिम अछि।

अध्ययन ३ · Late prehistoric and early iron-using horizons

मूल अंग्रेजी अध्याय 3 | मूल Word अनुच्छेद 308–395

‘लौहयुग’क नाम सुनिते व्यापक नगरीकरण, राजसत्ता आ समान तकनीकी क्रान्तिक कल्पना बनि जाइत अछि। तेसर अध्याय एहि सरलीकरणक आलोचना करैत अछि। लेखक उत्तर गंगा मैदानमे मृद्भाण्ड-प्रकार, लौह उपकरण, कृषि-विस्तार आ बसावट-सघनता अलग-अलग गतिसँ बदलल देखबैत छथि। काली पालिशदार भाँड़ अथवा लोहाक एकटा टुकड़ाक उपस्थितिसँ राज्यक गठन, नगर अथवा राजनीतिक जातीयता स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। विभिन्न उत्खननक कालसीमा जोड़बाक समय उपलब्ध स्तरक्रम पर बल देल गेल अछि।

‘लोहा आयल आ वन कटि नगर बसि गेल’ सन एकरेखीय कार्यकारण-सिद्धान्तक बदला बहुविध उत्पादन, विनिमय, मृद्भाण्ड, जल-सम्पदा आ बस्ती-स्थानक संयुक्त प्रक्रिया सामने अबैत अछि। ग्रन्थकार आरम्भिक राजनीतिक पाठकेँ खुदाइक वस्तुगत स्तरक नजीक राखि पढ़ैत छथि, मुदा साहित्यिक नामकेँ बिना प्रमाण विशिष्ट उत्खनित स्थलसँ नहि जोड़ैत छथि। एहि दृष्टि सँ ‘प्राक्-इतिहास’ सँ ‘ऐतिहासिक युग’मे प्रवेश एक सीमा-पत्थर नहि, स्रोत उपलब्धताक क्रमिक परिवर्तन अछि।

मुदा लोहेक तकनीकी प्रभाव पर ठोस निर्णय लेल वस्तुक धातुवैज्ञानिक परीक्षण, प्राप्तिक सन्दर्भ, औजारक उपयोग-चिह्न आ कृषि-उत्पादनक परिवर्तन अलग जाँच चाही। ग्रन्थक तुलनात्मक कालरेखा उपयोगी अछि, मुदा किछु क्षेत्रीय समांतर स्थलक परिणाम पूरे मिथिला–वज्जि–अंग पर लागू नहि कएल जा सकैत। ई शोध-सीमा मानि लेने लेखकक तकनीक-केन्द्रित एकाधिकारवादी कथा पर सफल प्रश्न बनैत अछि।

अध्ययन ४ · Environment, mobility, and settlement

मूल अंग्रेजी अध्याय 4 | मूल Word अनुच्छेद 396–484

पर्यावरण आ बसावट पर चौथम अध्याय हिमालयक पादभूमि, निक्षेप-मैदान, पुरान जलधारा, दलदली भूभाग आ ऋतुगत आवागमनकेँ इतिहासक सक्रिय परिस्थिति मानैत अछि। नदी एतय केवल प्राकृतिक ‘बाधा’ नहि, बरु व्यापार, माछमारी, सिंचाइ, सामाजिक सम्पर्क आ जमीनक अवसरक माध्यम अछि। लेखक परती–चरागाह, मौसमी बासस्थान आ स्थायी गामक बीच कठोर विभाजन नहि करैत छथि। एहन क्षेत्रमे बाढ़ि सँ नष्ट प्रमाण आ नव निक्षेपसँ दबि गेल अवशेषक इतिहास लिखब विशेष सावधानी चाहैत अछि।

‘ज्ञात स्थलसभक नक्शा’ वास्तवमे प्राचीन बस्तीक पूरा नक्शा नहि अछि—एहि तर्कक मूल्य बहुत पैघ अछि। जतय बाढ़िक निक्षेप दू-तीन मीटर अवशेष ढाँकि देत, ओतय अनुसन्धानक अभाव प्राचीन लोकजीवनक अभाव नहि कहि सकैत छी। ग्रन्थकार प्राकृतिक वातावरणकेँ समाजक पूर्ण नियन्ता नहि मानि सामाजिक श्रम, आवागमन आ परिस्थिति-अनुकूलनक भूमिका अलग उजागर करैत छथि। पर्यावरणवाद आ मानव-कर्मक बीच ई सन्तुलन क्षेत्रीय इतिहासक प्रासंगिक कसौटी अछि।

अध्यायक आलोचनात्मक सीमा स्थानीय भौमिकी आ बस्ती-वितरणक कालगत सहसम्बन्धमे अछि। नदीक वर्तमान पाट, पुरान नक्शा आ भूस्तरीय मापनक श्रृंखला बिना कोनो ऐतिहासिक गामक नष्ट होयबाक विशेष कारण निश्चित नहि कएल जा सकैत। पुस्तकक पर्यावरणीय मॉडल दिशा देखबैत अछि, घटनावार निर्णायक प्रमाण नहि; मुदा एहि सीमाक स्पष्ट उल्लेख लेखककेँ पर्यावरणीय नियतिवादसँ बचबैत अछि।

अध्ययन ५ · Videha in Vedic and Upanishadic textual worlds

मूल अंग्रेजी अध्याय 5 | मूल Word अनुच्छेद 485–578

पाँचम अध्याय शतपथ ब्राह्मणक विदेघ माथव आ सदानीरा सम्बन्धी प्रसंगकेँ वास्तविक प्राचीन सीमा-विवरणक सीधा प्रतिलिपि नहि मानैत अछि। वैदिक पाठक सम्पादन, शाखा, कालक्रम आ कर्मकाण्डीय उद्देश्यक पृष्ठभूमि पर कथा पढ़बाक आग्रह ऐतिहासिक रूपसँ उचित अछि। अग्निक पूर्वगमनक आख्यानकेँ सम्पूर्ण वन-उन्मूलन अथवा एक ऐतिहासिक सैन्य-विजयक प्रत्यक्ष वृत्तान्त बनाबब मूल पाठक विधागत पहचान बिसरब होयत। लेखकक ‘पाठ्य भूगोल पहिने, मानचित्र बादमे’क पद्धति एहि अध्यायक केन्द्र अछि।

बृहदारण्यक उपनिषदमे जनकक सभामे याज्ञवल्क्यक तर्क-वितर्क, मैत्रेयी प्रसंग आ दार्शनिक अधिकारक सामाजिक परिवेशकेँ एकहि ‘जनक-राज्यक दिनचर्या’ नहि मानल गेल अछि। अनेक परम्पराक काल, सम्पादन आ शैक्षिक उद्देश्य भिन्न भऽ सकैत अछि। दार्शनिक वाद-विवाद राजदरबारक ज्ञान-प्रतिष्ठा दर्शबैत अछि, मुदा एहि आधारपर जनकक वास्तविक राजकीय अभिलेख तैयार नहि होइत। एहि भेदसँ मिथिलाक बौद्धिक परम्पराक साहित्यिक महत्त्व घटैत नहि, बल्कि तकर स्रोतगत स्वरूप स्पष्ट होइत अछि।

सदानीराक आधुनिक नदीसँ समीकृत करबाक प्रयासमे भौगोलिक संकेत, भाषिक रूपान्तरण आ कालान्तरक नदी-परिवर्तन एकत्र जाँचब आवश्यक अछि। एकटा धार्मिक पाठक एकल पंक्तिक आधारपर निश्चित भौतिक सीमा अंकित नहि भऽ सकैत। अध्यायक उपलब्धि वैदिक विदेहकेँ सांस्कृतिक-शास्त्रीय इतिहासमे स्थान देब अछि, तथापि राजसत्ता, क्षेत्रफल आ तिथिक प्रश्नमे प्रत्यक्ष पुरातात्त्विक वा अभिलेखीय प्रमाणक मर्यादा स्वीकारब पड़त।

अध्ययन ६ · Janaka, Sita, and the discipline of reading tradition

मूल अंग्रेजी अध्याय 6 | मूल Word अनुच्छेद 579–706

जनक आ सीताक प्रसंगमे लेखक महाकाव्यक प्रतिष्ठा आ इतिहासक साक्ष्यकेँ दू अलग कसौटीपर राखैत छथि। रामायणक अनेक पाठरूप, क्षेत्रीय पुनर्कथन, उत्तरकालीन चित्रकला आ जनकपुरक वर्तमान धार्मिक भूगोल मिथिलाक स्मृतिपरम्परा बुझबा लेल अमूल्य अछि। मुदा धार्मिक स्थानक आधुनिक लोकप्रियता महाकाव्यक सभ घटना ताहि ठाम ऐतिहासिक रूपेँ घटित भेलाक साक्ष्य नहि। जनकपुरक वास्तु, तीर्थयात्रा आ मन्दिरक तिथि स्वयं अलग आधुनिक-ऐतिहासिक अनुसन्धानक विषय अछि।

सीताक चरित्रकेँ केवल धार्मिक पवित्रताक प्रतीक बनबैत लेखकक व्याख्या समाप्त नहि होइत; ओ स्त्रीक निर्णय, न्याय, निर्वासन आ सामाजिक अपेक्षाक नैतिक प्रश्न खोलैत अछि। बहु-रामायणक पाठान्तर एतय एक ‘शुद्ध मूल कथा’ खोजबाक बदला अनेक समाजक अर्थनिर्माणक अवसर बनैत अछि। साहित्यिक कल्पना आ जीवित अनुष्ठानक परस्पर सम्बन्ध मानैत ग्रन्थकार घटना-सत्य आ सांस्कृतिक प्रभावक भेद बचबैत छथि।

अध्यायक आलोचना एहि बातपर केन्द्रित रहबाक चाही जे जनक अथवा सीताक कोन परिचय कोन पाठस्तरमे अछि आ कोन वास्तु-परम्परा कखन बनल। एखन उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्यसँ ऐतिहासिक जनकक वंशानुक्रम, मिथिलाक एक निश्चित राजनीतिक सीमा वा सीताक जीवनक आधुनिक जीवनी तैयार कएनाइ अनुचित होयत। लेखकक अनेक कालमानपर आधारित अध्ययन मिथकक अपमान नहि करैत; ई स्रोतक उपयोगक सीमा सुनिश्चित करैत अछि।

अध्ययन ७ · Vajji, the Licchavis, and Vaishali

मूल अंग्रेजी अध्याय 7 | मूल Word अनुच्छेद 707–811

वज्जि-लिच्छवि सम्बन्धी अध्याय राजनीतिक भाषाक ऐतिहासिक परिवर्तनक सटीक पाठ प्रस्तुत करैत अछि। बौद्ध दीघनिकायमे संघक बैठक, परम्परा आ सामूहिक निर्णयक उल्लेख अछि, मुदा एकरा आधुनिक समान मताधिकारयुक्त 'लोकतन्त्र'क सरस उदाहरण बनायब जोखिमपूर्ण अछि। लेखक गण-संघ, कुलाधारित स्वामित्व, सीमित राजनीतिक सदस्यता आ सामाजिक असमानताक सम्भावना अलग राखैत छथि। वैश्यालीक पुरातत्त्व, बौद्ध अनुश्रुति आ आधुनिक राष्ट्रीय स्मारक-व्याख्या एक-दोसरक विकल्प नहि।

'आठ कुल'क रूढ़ विवरणक आलोचनामे एक समालोचनात्मक परम्पराक सन्दर्भ देल गेल अछि। ई उचित प्रक्रिया अछि, किएक तँ पारम्परिक विवरणक पुनरावृत्ति मात्र नूतन इतिहास-सत्य नहि बनबैत। सात अपरिहानिय धम्मक राजनीतिक आशय एक नैतिक-विधिक आदर्श पढ़ल जाए, न कि लिखित संविधानक प्रत्यक्ष अनुच्छेद। 'राजा विशालक गढ़'क भौतिक अवशेष पुरातत्त्वीय जाँच मांगैत अछि; एकर लोकप्रिय नाम स्वतः प्राचीन सभा-भवनक पहचान सिद्ध नहि करैत।

एहि अध्यायक एक सीमा राजनीतिक प्रक्रिया आ सामान्य ग्रामीण जनजीवनक बीच उपलब्ध साक्ष्यक असमानता अछि। बौद्ध पाठ सभामे अधिकार प्राप्त लोकक वाणी बचा सकैत अछि, मुदा स्त्री, भूमिहीन आ बाहरी समुदाय सभक भागीदारीक पूर्ण चित्र नहि। लेखक जँ संघक आधुनिक प्रशंसा सँ अधिक प्रक्रिया आ सदस्यताक सीमा पर बल देलनि, तँ इतिहासक पुनर्पाठ अधिक उत्तरदायी बनल अछि।

अध्ययन ८ · Anga, Champa, and the Magadhan horizon

मूल अंग्रेजी अध्याय 8 | मूल Word अनुच्छेद 812–887

अंग आ चम्पा पर अध्याय महाजनपद-सूची, बौद्ध–जैन पाठ, गंगा नदीक व्यापार-मार्ग आ चम्पाक खुदाइ-साक्ष्यकेँ पृथक् धरि जोड़ैत अछि। अंगकेँ एकटा स्थायी जातीय क्षेत्र अथवा महाभारतक कर्णक राज्यक प्रमाणित सीमामानचित्र मानल नहि गेल अछि। कर्ण-सम्बन्धी आख्यान सांस्कृतिक स्मृति दर्शा सकैत अछि; ओ राजकीय तिथिक स्वतन्त्र दस्तावेज नहि। बिम्बिसारक अंग-विजयक विवरण सेहो पाठपरम्परा आ तकर रचनाकालक आलोकमे परखल जएबाक चाही।

चम्पाक नगरीय जीवन बुझबाक लेल बाजार, व्यापार, नदी-घाट, बस्ती-स्तर आ धार्मिक संस्थाक अन्तर्सम्बन्ध पढ़ल गेल अछि। गग्गराक कमल-पोखरिक आख्यान शहरी पारिस्थितिकी आ स्मृतिसँ जुड़ि सकैत अछि, मुदा तकर अक्षरशः स्थल-पहचानक प्रश्न अलग अछि। लेखकमहाजनपदक ‘राजधानी’क चर्चा करैत पुरातात्त्विक आवास-क्रम आ पाठगत प्रतिष्ठाकेँ समानार्थी नहि मानैत छथि; ई व्याख्यात्मक सावधानी सराहनीय अछि।

अंग–मगध सम्बन्धक विस्तार लेल समकालीन राजकीय अभिलेख अपर्याप्त भऽ सकैत अछि। एहन परिस्थितिमे धर्मग्रन्थक कथाकेँ राजनैतिक वंशावलीक रूपमे उपयोग करब सीमित अछि। अध्यायक योगदान पूर्वी गंगाक व्यापारिक सम्पर्क आ अंगक स्थानिक इतिहासकेँ मिथिला–वज्जि सँग तुलनात्मक रूपसँ जोड़ब अछि; ओकर विश्वसनीयता स्थलवार खुदाइ, मृद्भाण्डक तिथि आ पुरातन नदी-मार्गक पुनर्निर्माणपर निर्भर रहत।

अध्ययन ९ · Buddhism, Jainism, and eastern Gangetic religious change

मूल अंग्रेजी अध्याय 9 | मूल Word अनुच्छेद 888–1011

बौद्ध, जैन, आजीवक आ ब्राह्मण परम्पराक पूर्वी गंगा मैदानमे सह-अस्तित्वकेँ नवम अध्याय ‘एकहि श्रमण क्रान्ति’क सरल कथा नहि बनबैत अछि। शिक्षामूल्य, तप, कर्म, अहिंसा, जातक, गृहस्थ-संन्यासी सम्बन्ध आ संघक संस्थागत आश्रय सबमे महत्वपूर्ण भेद अछि। ‘ग्रेटर मगध’ सन आधुनिक ऐतिहासिक प्रतिमान शोधक दृष्टि अछि, स्थिर प्राचीन भूगोलक नक्शा नहि। एहि भेदक स्वीकार सामाजिक-धार्मिक बहुलताक इतिहास लेल उपयुक्त आरम्भ अछि।

विचारक इतिहासकेँ सामाजिक-आर्थिक इतिहाससँ जोड़बाक विशेषता एतय उजागर अछि। संघ आ गणिक समाजमे दान, भोजन, व्यापार-मार्ग, शहरी प्रतिष्ठा, राजकीय संरक्षण आ स्त्री-प्रवेश सन प्रश्न विचारधाराक भौतिक आधार देखबैत अछि। मुदा धार्मिक ग्रन्थक आदर्श व्यवस्था वास्तवमे स्थानीय ग्रामजीवनमे कतबा लागू छल तकर स्वतंत्र प्रमाण आवश्यक अछि। अभिलेखीय दान आ कथात्मक आख्यानक प्रमाणभेद एतय निर्णायक होइत अछि।

बुद्ध-महावीरक दिनांक, वैश्यालीक पारम्परिक सम्बन्ध आ धर्म-सम्मेलनक कथा विभिन्न पाठपरम्परामे फराक भऽ सकैत अछि। तिनका निरपेक्ष एकटा कालरेखा देब शोधक जोखिम होयत। अध्याय जँ विवादित परम्पराकेँ ‘परम्परानुसार’ कहैत अछि, तकर अर्थ सामाजिक महत्त्वकेँ नकारब नहि—बल्कि ऐतिहासिक घटना सिद्ध होयबाक दावी पर प्रश्न रखब अछि।

अध्ययन १० · Empires, inscriptions, and pilgrim itineraries

मूल अंग्रेजी अध्याय 10 | मूल Word अनुच्छेद 1012–1128

मौर्य-गुप्त शासनक प्रसंगमे एतय साम्राज्यकेँ सर्वत्र समान शासनवाली भौगोलिक चादर नहि मानल गेल अछि। लौरिया-अरराज, लौरिया-नन्दनगढ़, रामपुरवा सन स्तम्भस्थलक भौतिक उपस्थिति, अभिलेखक पाठ आ राजकीय आज्ञाक वास्तविक क्रियान्वयन तीन पृथक् वस्तु अछि। अशोकक धम्मक सामान्य नैतिक आग्रह, बौद्धधर्मसँ सम्बन्ध आ प्रशासनिक आज्ञा एकहि शब्दमे समाहित नहि करबाक तर्क महत्त्वपूर्ण अछि।

चीनी यात्रिक फाहियान आ ह्वेनसांगक मार्गवर्णन समकालीन यात्राक स्मृति आ यात्रिकक प्रयोजन सँ गढ़ल पाठ अछि। मन्दिर अथवा स्तूपक बादक पुनर्निर्माण यात्रिकद्वारा देखल वास्तविक वस्तुक प्रमाण स्वतः नहि। तिथिक हिसाब, यात्राक दूरी, नामक वर्तनी आ भौगोलिक मार्गकेँ परस्पर जाँचबाक लेखकक प्रयत्न क्षेत्रीय इतिहासक परिचित त्रुटि—नाम-मात्रसँ स्थल-परिचय—केँ रोकैत अछि।

शिलालेख राजसत्ताक इच्छित सार्वजनिक स्वरक प्रमाण अछि, प्रशासनक सभ इलाकामे समान क्रिया भेल छल तकर नहि। एकटा नीतिगत स्तम्भपाठसँ साधारण प्रजाक समस्त अनुभव ज्ञात नहि होइत। अध्यायक मुख्य उपलब्धि राजकीय लिखित शक्ति आ स्थानिक स्मृतिसभक बीच ऐतिहासिक दूरी मापबाक पद्धति अछि; एहि सीमाबोधक बिना ‘साम्राज्यकाल’ केवल राजवंशक सूची रहि जाएत।

अध्ययन ११ · Licchavi Nepal and the problem of continuity

मूल अंग्रेजी अध्याय 11 | मूल Word अनुच्छेद 1129–1248

नेपालक लिच्छवि इतिहासमे समनामक समस्या अध्यायक केन्द्र अछि। वैश्यालीक लिच्छवि आ नेपालक शिलालेखीय लिच्छवि राजवंशक नाम-साम्य निश्चित जातीय-वंशगत अविच्छिन्नता सिद्ध नहि करैत। चाँगु नारायणक अभिलेख आ संवत्-गणनासँ दिनांकित राजनीतिक उपस्थिति प्रत्यक्ष देखाइत अछि, मुदा पुरान प्रव्रजनक कथा पछिला वंशावलीमे सुरक्षित स्मृति सेहो भऽ सकैत अछि। लेखक ‘सम्बन्धक सम्भावना’ आ ‘प्रमाणित वंशसम्बन्ध’ अलग राखि राजनीतिक कल्पना पर अंकुश लगबैत छथि।

अंशुवर्मा, मानगृह, कैलासकूटभवन, गुठी/गोष्ठी, ग्राम-अधिकारी, राजकीय दान आ कर-छूटक प्रकरण केवल राजाक जीवनी नहि, राज्य-संस्थाक विश्लेषण अछि। शासकीय पदवीक शाब्दिक आधुनिक अनुवाद, उदाहरणार्थ ग्रामनिकायकेँ आधुनिक नगरपालिका कहब, तकर राजनीतिक अर्थ बिगाड़ि सकैत अछि। राजा–मन्दिर–जमीन आ स्थानिक समाजक सम्बन्धमें लेखन-परम्पराक दृश्यमान पक्ष आ अदृश्य श्रमक अन्तर जाँचब आवश्यक अछि।

भौगोलिक सम्पर्कक कारण नेपाल आ मिथिलाक इतिहास जोड़ब जरूरी अछि, मुदा साझा संस्कृत दरबार-काव्यसँ एकहि जातीय वंशक निष्कर्ष नहि निकलैत। यातायात, विवाह, व्यापार, धार्मिक प्रतिष्ठा आ राजकीय भाषाक पृथक साक्ष्य एकत्र जाँचल जाए। अध्यायक सन्तुलित निष्कर्ष लिच्छवि नेपालक स्वतन्त्र अभिलेखीय इतिहासकेँ बचबैत अछि आ बाह्य सम्पर्कक अनावश्यक निषेध सेहो नहि करैत।

अध्ययन १२ · **Tirabhukti and the early-medieval regional order**

मूल अंग्रेजी अध्याय 12 | मूल Word अनुच्छेद 1249–1371

तिरभुक्ति पर अध्याय ‘विदेह’क वैदिक स्मृति आ गुप्त–पाल प्रशासनक अभिलेखीय नामकेँ एकहि स्थायी राज्यक्षेत्रक पर्याय नहि मानैत अछि। बसाढ़क मुहर, कटरा चार्टर, भागलपुर आ बनगाँवक ताम्रपत्र सन स्रोत प्रशासन, कराधिकार, धार्मिक दान आ भूमिक सीमाक अधिक ठोस संकेत दैत अछि। शासकीय पदकेँ आधुनिक जिला–उपजिलाक यान्त्रिक अनुवाद नहि करब लेखकक उल्लेखनीय सावधानी अछि।

ताम्रपत्रमे खेत, जल, वन, चरागाह, कर-अधिकार आ दान-प्राप्त संस्थाक उल्लेख मात्र धार्मिक उदारता नहि, ग्राम-अर्थव्यवस्थापर अधिकार-सम्बन्धक दस्तावेज अछि। ‘जमीन दान भेल’ कहलासँ ताहि भूमि पर काम करैत किसान गायब नहि भऽ जाइत अछि। राजा आ प्राप्तकर्ता बीचक सम्बन्ध देखबाक संग कृषकक अदृश्य हिस्सेदारी पुनः पूछब अध्यायक सामाजिक आलोचनात्मक मूल्य बढ़बैत अछि।

सत्ताकेँ ‘सामन्तवादी’ कहि एकहि व्याख्यासँ सभ परिवर्तन निर्धारित करब टारल गेल अछि। तिरभुक्तिक सीमाक परिवर्तन, गंगापारक प्रशासनिक जुड़ाव आ नेपालक दिशामे मार्गक इतिहास दस्तावेजवार जाँच माँगैत अछि। अभिलेखीय दिनांक रूपान्तरण आ लिपिपाठक स्वतन्त्र सत्यापनक बिना विशेष घटनाक निश्चित श्रृंखला दाबी रूपमे राखब चाही; ग्रन्थक प्रस्तुत बहुस्तरीय पद्धति एहि जोखिमकेँ घटबैत अछि।

अध्ययन १३ · The Karnatas and Simraongarh

मूल अंग्रेजी अध्याय 13 | मूल Word अनुच्छेद 1372–1511

सिमरौनगढ़क कर्णाट राज्यक अध्याय सीमापार इतिहासक सशक्त उदाहरण अछि। वर्तमान भारत–नेपाल रेखा पूर्वक राज्यक राजनीतिक सीमा नहि छल। सिमरौनगढ़क गढ़, जल-रचना आ पुरातात्त्विक सतह, धर्मस्वामिनक यात्रा-विवरण, ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर आ चण्डेश्वरक नीति-चिन्तन एक-दोसरसँ भिन्न ऐतिहासिक प्रकारक स्रोत अछि। राज्यक दरबार, विद्वत् परम्परा आ स्थानीक उत्पादनकेँ जोड़बाक कोशिश प्रभावी छैक।

गढ़क ईंट, परिखा आ पुरान जलरचनाक तिथि पर अनुमान सावधानी माँगैत अछि। आगिक परत भेटलाक अर्थ हरिसिंहदेवक समयक आक्रमण साबित होयब नहि; ‘विनाशक स्तर’ आ ‘इतिहासक नामित आक्रमण’ अलग प्रमाण अछि। सन् १३२४–२५क घटना राजकीय सम्बन्ध बदलि सकैत अछि, मुदा सामुदायिक जीवन, व्यापार आ ज्ञानपरम्पराक समग्र शून्य बनि गेल, एहन निष्कर्ष जरूरी नहि।

पञ्जी-वंशावलीक पछिला लिखित रूपसँ कर्णाट दरबारक तत्कालीन नियमक पुनर्निर्माण करबाक समय दिनांकित प्रतिलिपिक आवश्यकता अछि। गढ़क आकारसँ जनसंख्या गणनाक सरलीकरण अथवा न्यायशास्त्रक पाठसँ प्रत्यक्ष राजकीय क्रिया-प्रणाली निर्माण दूनू अनुचित होयत। अध्यायक बल तखने स्पष्ट होइत अछि जखन पुरातात्त्विक स्थल, राज्य-स्मृति आ साहित्यिक पाठक प्रमाणसीमा निचाँ-ऊपर नहि कएल जाए।

अध्ययन १४ · Oiniwar rule, Sultanate power, and political transition

मूल अंग्रेजी अध्याय 14 | मूल Word अनुच्छेद 1512–1647

ओइनिवार शासनक अध्ययनमे ‘राजवंश’ एकटा क्रमिक उत्पत्ति, सत्ता-संग्रह आ सल्तनत-संपर्कक क्षेत्र बनैत अछि। कीर्तिलता प्रशस्ति-गुणयुक्त राजनीतिक आख्यान अछि; एकरा आजुक निष्पक्ष घटनाक्रम नहि मानल जा सकैत। जौनपुर, दिल्ली, बंगाल आ मिथिलाक बीच राजनैतिक सहमतिसभ समयानुसार बदलल। शिवसिंहक मुद्रासाक्ष्य, कन्दाहा अभिलेख आ दस्तावेजी लेखन-परम्परा राज्यक सार्वजनिक वैधताक अलग-अलग चिह्न प्रदान करैत अछि।

‘लिखनावली’ सन ग्रन्थ प्रशासनिक व्यवहारक सम्भावित रूप, पत्रक विधा आ दैनन्दिन अधिकार-सम्बन्ध बुझबाक सामग्री अछि; मुदा प्रत्येक नमूना-पत्र वास्तविक प्रकाशित राजादेश नहि। राजमहिला, उत्तराधिकार, आश्रय-प्रवास आ वंशविभाजनक कथा परस्पर विरोधी परम्परासँ बनि सकैत अछि। अध्यायक ऐतिहासिक मूल्य एहि अनिश्चितताकेँ झाँपने बिना प्रस्तुत करबाक कारणेँ बढ़ैत अछि।

सन् १४५३क अभिलेख आ १५१३क वंशानुक्रम-सूत्र जँ ठोस अछि तँ सेहो परिपूर्ण नरेश-तालिका स्वतः तैयार नहि करैत। मुद्रा पर नाम होएब राजनीतिक दाबी देखबैत अछि, सत्ता-क्षेत्रक विस्तार नहि। तिथि-गणना, पाण्डुलिपिक संप्रेषण आ प्रतिलिपिक अभिलेखीय जीवनक बीच भेद राखल जाए। लेखकक बहुपक्षीय मॉडल औपनिवेशिक-पछिला सरलीकृत राजवंशक इतिहाससँ अधिक विश्वसनीय प्रश्न उठबैत अछि।

अध्ययन १५ · Two Vidyāpatis: Maithili, Sanskrit learning, and law

मूल अंग्रेजी अध्याय 15 | मूल Word अनुच्छेद 1648–1808

दू विद्यापतिक पृथक्करण एहि ग्रन्थक विशेष इतिहासलेखनात्मक प्रतिज्ञा अछि। लेखक पूर्व-ज्योतिरीश्वर पदावली-कविक काल-परिकल्पनाकेँ पछिला ओइनिवार-दरबारसँ सम्बद्ध संस्कृत-अवहट्ठ रचनाकार विद्यापति ठाकुरसँ अलग करैत छथि। साहित्यिक कृतिक भाषा, स्वनाम-उल्लेख, प्रति-पाण्डुलिपिक दिनांक, उद्धरण-परम्परा आ गायन-परम्पराक अलग साक्ष्य एहि निर्णयक आधार बनय चाही। केवल एकहि ‘विद्यापति’ नामक उपस्थितिसँ एकहि ऐतिहासिक व्यक्ति मानि लेब तर्कसंगत नहि; तकर उलट दू व्यक्तिक निष्कर्ष सेहो स्वतंत्र प्रमाणसँ परखल जएबाक चाही।

ग्रन्थकारक दोसर महत्त्वपूर्ण आग्रह जाति-वंश सम्बन्धी वर्तमान श्रेणीकेँ प्राचीन कालपर आरोपित नहि करब अछि। ‘श्रोत्रिय’ शब्दक पुरान शास्त्रीय अर्थ आ लगभग १८०० ईस्वीक पञ्जी-साक्ष्यपर आधारित नव सामाजिक उपजातिक प्रस्तावित निर्माण लेखक अलग राखैत छथि। जातीय वंशावली, विवाह-पंजी, विधिक ग्रन्थ आ लोक आख्यानक उद्देश्य अलग-अलग अछि। उगना अथवा गंगा-आख्यानक लोकजीवनमे प्रभाव आलोचनाक विषय छैक, मुदा तकर आधारपर निश्चित जीवनीक तथ्य जोड़ब नहि।

एहि पुस्तकक अपन स्थिर प्रतिज्ञा भेला कारणेँ एकर स्वतंत्र आलोचना विशेष कठोर होयबाक अछि। प्रथम, पदावलीक प्राचीनतम प्रतिलिपि, लेखकनाम, पाठ-भाषा आ अभिलिखित तिथि जाँचल जाए; दोसर, पछिला शास्त्रीय ग्रन्थकारक प्रमाणित कृति-सूची आ स्वीकृत इतिहासलेखनक विरोधी तर्क पूरा रूपमे राखल जाए। स्तरीकृत प्रमाण अनुपलब्ध भेला पर दू विद्यापति सिद्धान्तकेँ ग्रन्थकारक अनुसंधान-पक्ष कहब उचित अछि, सर्वस्वीकृत निर्विवाद ऐतिहासिक सत्य नहि।

अध्ययन १६ · Mughal-era Tirhut, Anga, and early-modern institutions

मूल अंग्रेजी अध्याय 16 | मूल Word अनुच्छेद 1809–1977

मुगलकालीन तिरहुतक इतिहासमे लेखक १५८०क सूबा-व्यवस्था, सरकार–महल, आइने अकबरीक कर-सूची, गंगा-व्यापार आ खण्डवला घरानाक उदय एक साझा प्रशासनिक क्षेत्रमे देखैत छथि। ‘७४ महल’क पाठ-संख्या राजस्व-प्रशासनक एक अभिलेखीय रूप अछि; एकरा आधुनिक ७४ जिलाक सीधा नक्शा नहि बनाओल जा सकैत। शासक, फौजदार, कानुनगो, चौधरी आ ग्रामस्तरक राजस्वकर्मीक अधिकार एक-दोसरपर चढ़ैत छल, एहन वितरित सत्ताक मॉडल अधिक उपयोगी अछि।

जागीर, खालसा, जमींदारी आ धार्मिक दानक कानूनी भेदक कारण कृषक–राज्य सम्बन्ध केवल ‘राजा बनाम प्रजा’ नहि रहैत अछि। खण्डवला वंशक पछिला कुल-कथा आ मूल फारसी–प्रशासनिक दस्तावेजक दिनांक मिलाएब अनिवार्य अछि। महेश ठाकुरक सम्बन्धी स्मृति राजकीय वैधताक भाषा होइत अछि; एकर कारण मुगल शासनसँ सर्वथा स्वतंत्र मिथिला राज्यक तत्काल स्थापना सिद्ध नहि। एहि प्रसंगमे लेखकक इतिहासलेखन सामाजिक दर्जा आ राजकीय सेवाक अन्तर खोलैत अछि।

नदीक पाट बदलला पर महलक करयोग्य क्षेत्र आ गामक प्रशासन बदलि सकैत छल। विभागीय संख्या, गाँवक गिनती आ क्षेत्रफलकेँ एकहि स्थिर मानचित्र पर उतारब तथ्यानुकूल नहि। अध्यायक अवदान प्रारम्भिक आधुनिक मिथिला, अंग आ नेपाल-तराईकेँ परस्पर सम्बद्ध अधिकार-क्षेत्रक रूपमे देखब अछि; मुदा आँकड़ा आ सत्ताक कालक्रमक निर्णायकता फारसी मूल दफ्तर, राजस्व अभिलेख आ शिलालेखक स्वतंत्र परीक्षणपर आश्रित रहत।

अध्ययन १७ · Company rule, Permanent Settlement, and Darbhanga Raj

मूल अंग्रेजी अध्याय 17 | मूल Word अनुच्छेद 1978–2126

१७६५क दीवानी आ १७९३क स्थायी बन्दोबस्तक बीचक प्रशासनिक परिवर्तनकेँ अध्याय एकसमान ‘कम्पनीक आरम्भ’ नहि कहैत अछि। बिहारक १७८९क दशवर्षीय प्रयोग, २२ मार्च १७९३क विनियम आ भू-राजस्वक वसूलीक नूतन व्यवस्था एक-दोसरसँ विशिष्ट अछि। जमींदारक राज्यसँ सम्बन्ध बदलल, मुदा कृषकक तत्काल स्वामित्व वा पुरान श्रमव्यवस्थाक स्वतः उन्मूलन नहि भेल। दरभंगा राजकेँ ब्रिटिश भारतक स्वतंत्र देसी रियासत कहबाक भ्रम सँ लेखक बचबैत छथि।

राजस्व-दस्तावेजक संग वंशावलीक राजनीति जोड़ब अध्यायक विशिष्ट पक्ष अछि। माधव सिंहक समय, लगभग १८००क उपजातिक प्रस्तावित निर्माण आ पञ्जी-शाखापुस्तकक तिथि प्रश्नस्थल अछि। ‘श्रोत्रिय’क शब्दार्थ आ स्थिर सामाजिक उपजाति ऐतिहासिक रूपेँ एके वस्तु नहि; एक कथित १७६०क माधव सिंह-आदेशक कालगत असम्भाव्यता लेखक स्वयं प्रश्नरूपमे रखैत छथि। एतय वंश-प्रतिष्ठाक सामाजिक शक्ति आ राज्यक राजस्व-नियमक परस्पर सम्पर्क देखाइत अछि।

स्थायी बन्दोबस्तसँ ‘जमींदारकेँ अनन्त स्वामित्व भेटल’ सन रूढ़ कथनक बदला खेतिहरक काश्त, लगान, परगनागत हिस्सा, न्यायालयक प्रक्रिया आ १८८५क काश्तकारी कानूनक अन्तर देखल गेल अछि। राज्यीय सर्वेक्षण तटस्थ विवरण मात्र नहि, सम्पत्तिक अधिकारनिर्माणक क्रिया सेहो छल। आलोचनात्मक सीमा एतय स्पष्ट अछि: सन–आदेशक प्रत्येक दावा मूल विधिक दस्तावेजसँ मिलान लेल आमंत्रित करैत अछि; इतिहासकारक उपयोगी सिद्धान्त साक्ष्यक स्वतन्त्र विकल्प नहि।

अध्ययन १८ · Agrarian society, markets, caste, and labour

मूल अंग्रेजी अध्याय 18 | मूल Word अनुच्छेद 2127–2308

कृषि समाजक अध्याय ‘आत्मनिर्भर स्थिर गाम’क कल्पना खण्डित करैत अछि। खेतिहार अधिकारक अनेक स्तर, लगान, बटाइ, ऋण, माछमारी, बाजार, मेलासभ आ श्रम-प्रवास परस्पर सम्बन्धित अछि। गामक आर्थिक जीवन सँ रेलवे, नदीघाट आ दूरक बाजार अलग नहि। ‘जमीन’ वस्तु नहि, अपन दावीक शृंखला बनि रहल अछि—एहि समझक कारणेँ जाति, वर्ग आ औपनिवेशिक कानूनक अर्थ स्पष्ट होइत अछि।

कामिया–कमियौती, नीलक वाणिज्यिक खेती, मजदूरी आ स्त्रीक अप्रत्यक्ष श्रमक वर्णन सामाजिक इतिहासक जरूरी सुधार अछि। स्त्रीक नाम भू-अभिलेखमे अनुपस्थित भऽ सकैत अछि, मुदा कृषि-श्रममे ओ अनुपस्थित नहि छल। जाति रोजगारक अवसर प्रभावित करैत छल, मुदा प्रत्येक जाति–पेशा सम्बन्ध स्थिर शास्त्रीय तालिका नहि। ऋण, संकट आ मौसमी प्रवास खेतीक अतिरिक्त गतिविधि नहि, घर-परिवारक अर्थव्यवस्थाक मुख्य तत्व छल।

‘धानक औसत उत्पादन’ अथवा ‘जमींदारीक अतिरिक्त लगान’ सन आँकड़ा स्रोतक नमूना, वर्ष, जिला, मूल्य आ हरक आधार परखि उपयोग होयबाक चाही। एतय ग्रन्थकार आँकड़ाक हर-संख्या पर ध्यान देबाक आग्रह करैत छथि; ई क्षेत्रीय विषमता कें बुझबा लेल प्रासंगिक अछि। मुदा न्यायालयक छिटपुट उदाहरण पूरे मिथिला, वज्जि वा अंगक समस्त किसानपर सामान्य निष्कर्ष नहि दैत; एहि कारण विविध स्थल–कालक उदाहरणक पृथक पहचान आवश्यक रहत।

अध्ययन १९ · Rivers, calamity, transport, and the colonial state

मूल अंग्रेजी अध्याय 19 | मूल Word अनुच्छेद 2309–2491

नदी, आपदा आ औपनिवेशिक शासनक अध्यायमे कोसी, गण्डक, कमला, बागमती आ गंगा अलग-अलग जलवैज्ञानिक व्यवहारक स्रोत अछि। बाढ़िक घटना केवल मौसमक बाहरी धक्का नहि; तटबन्ध, रेल, सड़क, प्रशासनिक कर, जमीनक ‘जलसँ बनब–कटब’ आ घरक पुनर्वाससँ जोखिम बदलैत अछि। ‘एल्लुवियन–डिल्लुवियन’ सन कानूनी धारणा नदीक बदलैत पाटकेँ निजी सम्पत्तिक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि।

१८७३क बंगाल तटबन्ध अधिनियम आ औपनिवेशिक बाढ़ि-प्रतिवेदनक उपयोगमे शासनक दृष्टि केंद्रमे अछि। दस्तावेज कोन सम्पत्ति बचएबाक योजना बनल ताहि पर लिखबैत अछि, मुदा विस्थापित स्त्री–कृषक, माछुआ आ भूमिहीन समुदायक भोगल पीड़ा समुचित नोंद नहि भऽ सकैत। १९३४क भूकम्पक प्रशासनिक प्रतिवेदन जलविपत्तिक इतिहाससँ जोड़ल जाइत अछि, मुदा भूकम्प आ बाढ़ि भिन्न प्रकारक भौतिक घटना अछि।

लेखकक ‘प्राकृतिक बाढ़ि’ आ ‘प्रशासनिक जोखिम-वितरण’क भेद महत्त्वपूर्ण छैक। पुरान नदी-मानचित्रसँ कोसीक सदा एके दिशा मे सरकबाक सरल कथा बनाबब सावधानी माँगैत अछि। विशिष्ट परियोजनाक लाभ–हानि तय करबाक लेल पानि-पटल, निक्षेप, तटबन्धक कटान, खर्चक लेखा आ पीड़ितक वास्तविक अनुभव मिलिते पड़त। अध्यायक ताकत आंशिक सरकारी स्रोतकेँ संपूर्ण प्राकृतिक सत्य नहि मानब अछि।

अध्ययन २० · Education, print, language, reform, and nationalism

मूल अंग्रेजी अध्याय 20 | मूल Word अनुच्छेद 2492–2713

शिक्षा आ छपाइ पर अध्याय आधुनिक विद्यालयक स्थापना सँ पहिने लोकजीवनमे चलैत अनेक अध्ययन-परम्परा—टोल, पाठशाला, मकतब, मदरसा, घरेलू शिक्षा, व्यापारिक गणना, शिल्पक प्रशिक्षण—केँ अलग पहिचानैत अछि। कम्पनी आ ब्रिटिश शिक्षा-नीतिक सँग दरभंगा राजक संस्थागत निवेशक सम्बन्ध इतिहासक प्रश्न अछि, मुदा ‘विद्यालय नहि छल’ सन सरल उपनिवेशिक भाष्य तथ्यक सम्पूर्णता नहि। भाषा-सम्बन्धी मान्यता सेहो विश्वविद्यालय, परीक्षा, मुद्रण आ जनसंचारमे भिन्न प्रक्रियासँ विकसित भेल।

मुद्रित पत्रिका, व्याकरण, शब्दकोश आ साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र सांस्कृतिक शक्ति बनैत अछि। औपनिवेशिक शिक्षासँ रोजगारक नव रास्ता खुलल, मुदा जाति, लिंग आ सम्पत्तिक आधारपर बराबर पहुँच स्वतः नहि बनल। मैथिली आ आन क्षेत्रीय भाषाक स्थिति कें केवल ‘हिन्दी विरुद्ध मैथिली’ सन द्विभाजन सँ नहि बुझल जा सकैत, किएक तँ फारसी–उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत आ स्थानीय व्यवहारक शिक्षणक्षेत्र सेहो उपस्थित रहल।

राष्ट्रीयताक वाणी, भाषा-संगठन आ साहित्यिक संस्था एकहि कार्यक नाम नहि अछि। राजनीतिक दाबीकेँ जनगणनाक मानकीकरण, मुद्रणक व्यवहार आ विधानपरक निर्णय सँ पृथक जांचल जाए। लेखकक दू विद्यापति सम्बन्धी प्रतिज्ञा जहाँ एहि अध्यायमे प्रयोग भेल अछि, ओ लेखकक अपन अनुसंधान-परिकल्पना कहल जायत; शिक्षाक प्रमाणित तिथिसभसँग ओकरा अनिवार्य रूपसँ जोड़ब उचित नहि। एहि प्रकारक विभाजन अध्यायक निष्पक्षता सुरक्षित राखैत अछि।

अध्ययन २१ · The Nepal Tarai, Rana rule, and the border to 1951

मूल अंग्रेजी अध्याय 21 | मूल Word अनुच्छेद 2714–2912

नेपाल-तराईक औपनिवेशिक सीमाइतिहासमे सुगौली सन्धि आ १८१६क पूरक भू-व्यवस्था स्पष्ट ऐतिहासिक दस्तावेज अछि, मुदा संधि-पाठक धारा, अनुमोदन आ प्रशासनिक अमल अलग-अलग चरण अछि। पुस्तक तराईकेँ ‘रिक्त जंगल’ नहि मानि पुरान कृषि-बस्ती, वन–घासभूमि, व्यापार आ तीर्थयात्रासँ जुड़ल समाजक क्षेत्र बतबैत अछि। भारत–नेपालक आधुनिक राजकीय सीमा बनलासँ पहिने लोकसम्बन्ध चलि रहल छल; सीमांकनक बाद तकर विधिक अर्थ बदलल।

राणा शासन, जमीन–राजस्व, यातायात आ मलेरियाक पर्यावरणीय प्रश्न एक-दोसरसँ जुड़ैत अछि। नेपालक तराईमे भूमि-प्राप्ति आ प्रवासक कहानी केवल राज्यक उपक्रम नहि; पुरान बस्ती, श्रमजीवी लोक आ स्थानीय भाषिक समुदायक पक्ष अलग अभिलेख चाहैत अछि। १९५०क भारत–नेपाल सन्धिक समसामयिक कानूनी प्रभावकेँ १८१६क सीमांकनक समान मुद्दा नहि कएल जा सकैत।

अध्यायक स्रोत-विवेक प्रशंसनीय अछि जँ समझल जाए जे सन्धिक पाठ एकर कानूनी रूप दैत अछि, मुदा सीमा पर बसल लोकक वास्तविक अनुभव बुझबा लेल कर–रसीद, अदालत, यात्रा-विवरण, भू-अभिलेख आ मौखिक स्मृति सेहो चाही। उपनिवेशिक अधिकारीक मानचित्र ‘प्राकृतिक सीमा’ नहि, परस्पर विरोधी प्रशासनिक दावीक समाधानक प्रयास सेहो छल। एतय ओहि अन्तरकेँ स्पष्ट राखब इतिहासक उत्तरदायित्व अछि।

अध्ययन २२ · Land reform, democracy, and changing regional power

मूल अंग्रेजी अध्याय 22 | मूल Word अनुच्छेद 2913–3050

स्वतन्त्रताक पश्चात् बिहारक भूमि-सुधारक अध्याय १९५०क बिहार भूमि-सुधार अधिनियम, संविधानक भूमि-विधान आ जमींदारीक वैधानिक समाप्तिक विशिष्ट परिणाम जाँचैत अछि। स्वामित्व बीचक परत हटब आ खेतिहारेक वास्तविक भूमि-वितरण बढ़ब दू अलग घटना अछि। दरभंगा राजक क्षतिपूर्ति, न्यायालयक चुनौती आ बाँचल आर्थिक प्रभुत्व बतबैत अछि जे ‘कानून बदलिए गेल’ कहब सामाजिक शक्तिक सम्पूर्ण परिवर्तन नहि।

रैयतक अधिकार, सीलिंग, जमीनक नापजाँच, नामान्तरण आ प्रशासनिक भ्रष्टाचारक जोखिम वास्तविक सुधारक दिशा बदलैत अछि। सामाजिक आन्दोलन, दलित-पिछड़ा राजनीति आ पंचायतक सत्ता ग्रामीण प्रभुत्वक इतिहासमे हस्तक्षेप करैत अछि, मुदा अलग-अलग जिलामे एकरे गति वा प्रभाव नहि मानल जएबाक चाही। लेखक कानूनक आकांक्षा आ स्थानीय क्रियान्वयनक बीचक फाँकक्कैं प्रमुख विषय बनबैत छथि।

उल्लिखित नीतिसभक प्रभावक परिमाण तय करबाक लेल जिला-विशिष्ट भू-अभिलेख, अतिरिक्त जमीनक वितरण, लाभार्थीक जाति-लिंग विवरण आ अदालती निर्णय चाही। समयबद्ध राजनीतिक नाम-सूची पर्याप्त नहि। ग्रन्थक विश्लेषण स्वतंत्रता आ लोकतन्त्रक संस्थागत रूपान्तरकेँ स्वीकार करैत अछि, मुदा पुरान जमींदारी समाप्त भेला मात्रसँ सामन्ती सम्बन्धक सम्पूर्ण अन्त भऽ गेल कहबाक एकरेखीय निष्कर्ष सँ बचैत अछि।

अध्ययन २३ · The India-Nepal borderland, migration, and exchange

मूल अंग्रेजी अध्याय 23 | मूल Word अनुच्छेद 3051–3217

भारत–नेपाल सीमाक्षेत्रक अध्याय ‘खुलल सीमा’क अर्थ कानूनी सीमा-रहित समाज नहि मानैत अछि। भारत आ नेपालक नागरिकता, दण्ड-विधान, सम्पत्ति-अधिकार आ चुनावी संस्थासभ पृथक् अछि; सीमा पर विवाह, श्रम, व्यापार आ तीर्थयात्राक निरन्तर आवागमन ओकरा समाप्त नहि करैत। १९५०क सन्धिक सातम अनुच्छेद आ तकर व्यवहारिक उपयोगक भेद सामाजिक इतिहासक मूल प्रश्न बनैत अछि।

‘रोटी-बेटी’ सन लोकप्रिय अभिव्यक्ति समाजक दीर्घ सम्पर्क बुझबैत अछि, मुदा विवाहे प्रवास, विदेशी-जन्म आ विदेशी-नागरिकता एके प्रकारक जनगणनात्मक श्रेणी नहि। स्त्रीक नागरिकता-कागज, उत्तराधिकार, विद्यालय आ स्वास्थ्यसुविधा पर राष्ट्रीय सीमाक प्रभाव पुरुष-प्रधान व्यापार-आख्यानसँ अलग जाँच चाहैत अछि। जनकपुर–जयनगर अथवा अन्य जोड़ी शहरक उदाहरणसँ स्थानीय विविधता बुझल जा सकैत अछि, मुदा पूरे सीमाक्षेत्रक व्यवहारक निष्कर्ष नहि।

अध्यायक शक्ति भावनात्मक सीमापार एकताक मान्यता दैतो आधुनिक राष्ट्रराज्यक असमान विधिक भारकेँ पहिचानब अछि। व्यापारक आँकड़ा, विवाहक प्रमाण आ जनगणनाक परिभाषा मिलान बिना संख्यात्मक दावा नहि स्थापित होइत। लेखकक तुलनात्मक मॉडल सांस्कृतिक निरन्तरता आ राज्यीय अंतरकेँ एकसंग देखबैत अछि, मुदा ताहिमे ‘एक क्षेत्र, एक नागरिकता’क भ्रम नहि राखैत।

अध्ययन २४ · Maithili and Angika: language, literature, and recognition

मूल अंग्रेजी अध्याय 24 | मूल Word अनुच्छेद 3218–3402

मैथिली आ अंगिकाक भाषिक इतिहासक अध्याय संस्थागत मान्यताकेँ एकटा घटनामात्र नहि मानैत अछि। विश्वविद्यालयक अध्ययन-विषय, साहित्य अकादेमीक पुरस्कार-मान्यता, भारतीय संविधानक आठम अनुसूची आ जनगणनाक नामांकन सभक उद्देश्य भिन्न अछि। ग्रियर्सनक भाषिक सर्वेक्षणमे दर्ज क्षेत्रीय भेद आ पछिला ‘अंगिका’ नामक सामाजिक स्थापना एकहि कालक प्रमाण नहि। ‘छिकाछिकी’ वा भागलपुरी भाषारूपक ऐतिहासिक उल्लेख वर्तमान आत्मपहचानक अधिकारक स्वतः अन्तिम निर्णय नहि।

एक भाषाक भीतर अनेक बोलचाल हो सकैत अछि, आ समान भाषा-परिवारक समुदाय अपन विशिष्ट पहचान सेहो बनाबि सकैत अछि। एहि मुद्दामे मात्र ध्वनि-व्याकरणक समता पर्याप्त नहि; शिक्षा, मुद्रण, साहित्यिक संस्था, भाषा-आन्दोलन आ मान्यता कतेक विधिसँ बनैत अछि से सेहो परीक्षणयोग्य अछि। पुस्तक अंगिका आ मैथिलीकेँ प्रतिस्पर्धात्मक दर्जाक एक सीढ़ीपर नहि राखि अलग संस्थागत क्षेत्रमे देखबाक प्रस्ताव करैत अछि।

अध्यायमे किछु भाषानामक ऐतिहासिक तिथि, जनसंख्या आ संस्थागत फैसला सार्वजनिक अभिलेखसँ पुनः जाँचल जा सकैत अछि; मात्र ग्रन्थकारक सूचीकेँ अद्यतन कानूनी स्थिति नहि मानब। भाषिक स्वनाम आ औपनिवेशिक वर्गीकरणक मतभेदकेँ भाषा-अस्तित्वक सम्पूर्ण निषेध अथवा निर्विवाद स्वतंत्रता दुनूमे सीमित करब अनुचित अछि। आलोचनात्मक योगदान एहीबहुविध प्रमाण-क्षेत्रक तुलनात्मक विवेचनमे अछि।

अध्ययन २५ · Mithila painting, gender, and the cultural economy

मूल अंग्रेजी अध्याय 25 | मूल Word अनुच्छेद 3403–3595

मिथिला चित्रकलाक अध्याय घरेलू भित्ति-चित्र, अरिपन, कोहबर, कागजपर कलाकृति आ वैश्विक कला-बाजारकेँ एकहि अपरिवर्तित प्रथा नहि मानैत अछि। १९१९क विवाह-चित्रक दस्तावेज, १९३४क भूकम्पपश्चात् दर्ज निरीक्षण, १९३८–४०क फोटोग्राफ आ १९४९क अंग्रेजी लेखनक अलग अभिलेखीय प्रभाव अछि। कलाक प्राचीनता धार्मिक अनुश्रुतिसँ हो सकैत अछि, मुदा विशिष्ट चित्रक तारीख ओकर भौतिक साक्ष्यसँ तय होयत।

विवाह-घरक स्त्री-कला जखन कागज आ व्यापारिक बाजारमे आएल, तखन कलाक माध्यम, सृजनकर्ता, उपार्जन, संग्रहालय आ मध्यमवर्गीय अभिरुचि बदलल। केवल ‘लोककला विश्वविख्यात भेल’ कहब पर्याप्त नहि; कलाकारकेँ भेंटल मूल्य, मध्यस्थक हिस्सा, नामश्रेय, जातीय भेद आ स्त्रीक आर्थिक अधिकार जाँचब आवश्यक अछि। जनकपुरक कला-संस्थासभ आ बिहारक बाजार-व्यवस्था अलग-अलग राज्यीय संदर्भमे चलैत अछि।

अध्यायक सौन्दर्यबोध रूपांकनक ‘प्रामाणिक परम्परा’ आ नव शिल्पक सम्भावनाक बीच कठोर ऊँच–नीच नहि बनबैत; ई सकारात्मक अछि। मुदा प्रारम्भिक चित्रक दस्तावेजक पुनरुत्पादन-अधिकार, फोटो-तिथि आ कलाकारक सही श्रेयक परीक्षण बिना निश्चित उद्भव-वर्ष घोषित करब अनुचित रहत। इतिहास, लिंग आ बाजारक तीनू रेखाकेँ जोड़ब ग्रन्थक मुख्य उपलब्धि अछि।

अध्ययन २६ · The Kosi, floods, infrastructure, and environmental risk

मूल अंग्रेजी अध्याय 26 | मूल Word अनुच्छेद 3596–3812

कोसीक इतिहासमे नदीकेँ मानवीय उद्देश्यवाला ‘शत्रु’ नहि मानि हिमालयी निक्षेप, ढाल, धारा-स्थानान्तरण, अवसादन आ बाढ़ि-मैदानक भौतिक प्रणालीक रूपमे देखल गेल अछि। सप्तकोसीक स्रोत-नदी, विशाल नदी-पंखा आ आबादीक बढ़ैत घनत्व परस्पर सम्बन्धित अछि। २००८क कुसहा घटना सम्बन्धी ६० किलोमीटर आ १२० किलोमीटरक अलग मापक दूरीक भेद लेखक स्पष्ट करबाक चेष्टा करैत छथि। दूरीक आधार बदलला पर संख्या बदलि सकैत अछि; एकरा स्वतः विरोध नहि मानल जा सकैत।

तटबन्धक लाभ आ हानिक मूल्याङ्कन ‘बाढ़ि आयल’ अथवा ‘तटबन्ध बनल’ सन द्विआधारी कथासँ नहि होइत। भीतरक निकासी, गाद, कटान, मरम्मत, जलभराव, विस्थापन, पुनर्वास आ बीमा-राहत मिलि जोखिम निर्मित करैत अछि। परियोजनाक अभिलेख शासकीय दावा देखबैत अछि, मुदा पीड़ितक वास्तविक जनजीवन सुनब स्वतंत्र सामाजिक अनुसन्धान अछि। विशेषतः एक गाँवक सुरक्षा पड़ोसक दोसरा गाँवपर जोखिम स्थानान्तरित कऽ सकैत अछि।

एहि अध्यायमे परिमाणात्मक प्रमाणक कसौटी कठोर रहबाक चाही—वर्षवार जलप्रवाह, मानचित्रक स्रोत, तटबन्धक भंग-स्थान, पुनर्वासक दस्तावेज आ लागतक वास्तविक मूल्य। विश्वबैंक अथवा सरकारी प्रतिवेदन पक्का प्राथमिक प्रशासनिक साक्ष्य भऽ सकैत अछि, मुदा परियोजनाक सम्पूर्ण सामाजिक सफलता स्वतः सिद्ध नहि। ग्रन्थ नदी-अभियान्त्रिकी आ लोकतांत्रिक उत्तरदायित्वकेँ एकसंग जाँचबाक सार्थक ढाँचा दैत अछि।

अध्ययन २७ · Madhesh, representation, and plural citizenship in Nepal

मूल अंग्रेजी अध्याय 27 | मूल Word अनुच्छेद 3813–4068

मधेशक इतिहासक अध्याय ‘मधेश’, ‘तराई’ आ ‘मिथिला’ कैं एकहि क्षेत्र वा स्थिर एकजातीय समुदाय नहि मानैत अछि। नेपालक १९५२क नागरिकता-विधि, पञ्चायती कालक भाषानीति, १९९०क बहुदलीय परिवर्तन, संघीय पुनर्गठन आ नवीन भाषिक आन्दोलन अलग-अलग राजनीतिक संदर्भ अछि। ‘मधेसी’क आधुनिक व्यापक राजनीतिक पहचान पुरान भूगोलक शब्दावलीसँ सीधा अपरिवर्तित नहि रहि गेल, एहन ऐतिहासिक सावधानी अध्यायक आधार अछि।

नागरिकता आ प्रतिनिधित्वक प्रश्नमे संविधानक पाठ, नागरिकता कागजक प्रशासनिक प्रक्रिया, चुनावी सीट-वितरण आ सामाजिक अनुभवक प्रमाणभेद राखल गेल अछि। लिंग, जाति, भाषा, धर्म आ क्षेत्रीय विषमता ‘समस्त मधेसी एक मतक समूह’ सन अवधारणाकेँ प्रश्न करैत अछि। मैथिली, बज्जिका, भोजपुरी, थारू आ अन्य भाषिक समूहक विविधताकेँ संघीय राजनीति सँ अलग नहि कएल जा सकैत।

अध्यायमे २०२५क प्रादेशिक आधिकारिक भाषा विधेयकक प्रसंग सन नूतन घटना अछि; कानूनक वर्तमान स्थितिक अन्तिम निर्णय मूल अधिनियम, सदनक कार्यवाही आ सरकारक अद्यतन सूचनासँ परखल जाए। पुस्तकक अतीत-सिद्धान्त उपयोगी होइतहुँ राजकीय नीति भविष्य मे बदलि सकैत अछि। एहि कारणेँ राजकीय दाबीकेँ निश्चित काल-सन्दर्भसहित रखबाक अनुशासन अनिवार्य अछि।

अध्ययन २८ · Conclusions: connected histories without false unity

मूल अंग्रेजी अध्याय 28 | मूल Word अनुच्छेद 4069–4299

अन्तिम अध्याय अपन शीर्षक ‘सम्बद्ध इतिहास, मिथ्या एकता नहि’क तर्ककेँ समस्त पुस्तकक वैचारिक निष्कर्ष बनबैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगकेँ एक शाश्वत राजनीतिक समुदाय कहि जोड़ला सँ स्थानीय भेद विलुप्त भऽ जायत; तथापि नदी, मार्ग, भाषा, राज्य-संस्था, विवाह आ व्यापारक कारण इतिहास पूर्ण अलग-अलग टापू सेहो नहि। लेखक ‘क्षेत्र’केँ अपरिवर्तित बहुभुज नहि, प्रमाणाधारित सम्बन्धक बदलैत जालक रूपमे परिभाषित करैत छथि।

पुस्तकक समेकित पद्धतिमे उत्खनन, राजकीय शिलालेख, विधिक आदेश, साहित्यिक स्मृति, पञ्जी, भौगोलिक अभिलेख आ जनगणनाक स्रोतगत सीमा दोहरायल गेल अछि। एतय पुनरुक्ति केवल शैलीगत दोष नहि; अध्यायवार अपन प्रतिज्ञा पर अन्तिम आत्मपरीक्षण सेहो अछि। दू विद्यापति आ श्रोत्रियक लगभग १८००क परिकल्पनाक पुनः आग्रह पुस्तकक विशिष्ट पक्षधरता देखबैत अछि, ताहि संग प्रतिपक्षक उपलब्ध प्रमाण स्वतंत्र रूपेँ परखबाक जरूरतो याद देबैत अछि।

समेकित मूल्याङ्कनमे एहि ग्रन्थक उपलब्धि व्यापक कालावधि, बहुविध स्रोतक सचेत भेद, भारत–नेपालक साझा पर्यावरणीय क्षेत्रक अध्ययन आ आधिकारिक इतिहासक सरलीकरणक आलोचना अछि। सीमा अछि—कतिपय मूल स्रोतक प्रत्यक्ष प्रतिच्छवि वा स्वतंत्र आलोचनात्मक संस्करण एही उपलब्ध Word पाठसँ हम नहि मिलाओल; किछु निश्चित ऐतिहासिक प्रतिज्ञा अधिक दस्तावेज चाहैत अछि। आगामी सामाजिक–आर्थिक इतिहासक समीक्षा एहि राजनीतिक इतिहासक पूरक परीक्षा रूपमे उपयोगी होयत, प्रमाणक स्थानापन्न नहि।

समेकित आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

समग्र पुस्तकक प्रधान उपलब्धि तीन ऐतिहासिक नामकेँ एकटा कालातीत सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक सत्ता बना देबाक बदला प्रमाणसँ निर्मित अलग-अलग भूगोलक रूपमे देखब अछि। नदी-प्रणाली, स्थलांतरण, सत्ता, भाषा आ स्मृतिक सम्बन्ध अपन समयक अनुसार बदलैत अछि। ‘connected histories without false unity’क अन्तिम प्रतिज्ञा एहि कार्यपद्धतिक सार अछि।

प्रागैतिहासिक अध्यायसभक बल साक्ष्यक अपूर्णताकेँ मानब अछि। पुरातत्त्वमे सामग्री भेटलासँ भाषाक नाम अथवा जातीयताक निश्चित पहचान सिद्ध नहि होइत। वैदिक आ महाकाव्य सम्बन्धी अध्यायमे साहित्यिक स्मृतिसँ स्वतंत्र राजकीय इतिहासक तुलना करबाक प्रयास अछि। एहि आलोचनात्मक दूरीसँ पाठक लोकसमुदायक दैनन्दिन परम्परा आ अभिलेखीय सत्यापनक अन्तर समझि सकैत छथि।

कर्णाट आ ओइनिवारक अध्ययन राजवंश-क्रमकेँ निर्विवाद मानबाक बजाए अभिलेख, साहित्य आ राजनीतिक परिवर्तनक असमान स्रोत पर निर्भर मानैत अछि। मुदा दू विद्यापति, श्रोत्रिय श्रेणी अथवा विशिष्ट पञ्जी-आधारित काल-निर्धारण सन मुख्य प्रतिज्ञासभकेँ अधिक प्रत्यक्ष दस्तावेज, तिथिक आलोचनात्मक परीक्षण आ विरोधी व्याख्याकेँ समान न्याय दैत अलग प्रमाण-सरणी सँ पुष्ट करब उचित होयत। पुस्तकमे उपस्थित सन्दर्भसूची उपयोगी अछि, किन्तु स्रोत-संख्या स्वयं निष्कर्षक सत्यता नहि।

आधुनिक इतिहासमे भूमि-सुधार, सीमावर्ती नागरिकता, मैथिली–अंगिका मान्यता, मिथिला चित्रकलाक अर्थव्यवस्था, कोसीक बाढ़ि-प्रबन्ध आ मधेशक प्रतिनिधित्वकेँ एकहि राष्ट्रिय कथामे समाप्त नहि कएल गेल अछि। ई ग्रन्थक महत्त्वपूर्ण अन्तरक्षेत्रीय उपलब्धि अछि। मुदा विधिक तिथि, जनगणना, प्रशासनिक आदेश आ सांख्यिक दाबी कालविशेषक होइत अछि; मूल ग्रन्थक २०२६क पाठकेँ भविष्यक अद्यतन विधिक अवस्थाक विकल्प नहि मानल जा सकैत।

निष्कर्षतः ई कृति एकटा बहुस्रोत क्षेत्रीय इतिहासक महत्वाकांक्षी रचना अछि, जकर पद्धतिक बल स्रोत-प्रकारक पृथक्करण आ मिथ्या एकता सँ बचबमे अछि। विवेचनक सीमा बाह्य मूल स्रोतक प्रत्यक्ष पुनर्परीक्षण, किछु ऐतिहासिक प्रतिज्ञाक प्रतिपक्षीय तुलनाक अपूर्णता आ अत्यन्त विस्तृत विषयक्षेत्रक समान प्रमाण-घनत्व बनि नहि पाबयब अछि। पाठक लेल उपयोगी कसौटी रहत—कोन कथन पुस्तकक दाबी, कोन तर्कसंगत अनुमान आ कोन स्वतंत्र रूपसँ प्रमाणित इतिहास।

ग्रन्थसूची : पुस्तकाधारित स्रोत

निम्न पुस्तकसभ मूल ग्रन्थक “General source register” सँ चुनल गेल अछि। एहि सूचीक विवरण मूल Wordक अनुसार अछि; एहि स्वतंत्र समीक्षामे सभ पोथीक भौतिक प्रति स्वयं देखबाक दावा नहि कएल गेल अछि।

Gajendra Thakur. History of Mithila, Vajji & Anga in India & Nepal: From Prehistory to the Contemporary Period. Videha, 2026. (एहि समीक्षाक मूल प्राथमिक ग्रन्थ।)

Alam, Muzaffar. The Languages of Political Islam: India 1200–1800. University of Chicago Press, 2004.

Asher, Catherine B., and Cynthia Talbot. India Before Europe. Cambridge University Press, 2006.

Bronkhorst, Johannes. Greater Magadha: Studies in the Culture of Early India. Brill, 2007.

Choudhary, Radhakrishna. A Survey of Maithili Literature. Ram Vilas Sahu, 1976.

Grierson, George A. Linguistic Survey of India, vol. V, part II: Indo-Aryan Family, Eastern Group. Office of the Superintendent of Government Printing, 1903.

Hill, Christopher V. River of Sorrow: Environment and Social Control in Riparian North India, 1770–1994. Association for Asian Studies, 1997.

Mishra, Jayakanta. A History of Maithili Literature, vol. 1: Early and Middle Periods. Tirabhukti Publications, 1949.

Richman, Paula, and David L. Szanton, eds. India’s Mithila Painting. University of Washington Press, 2025.

Salomon, Richard. Indian Epigraphy: A Guide to the Study of Inscriptions in Sanskrit, Prakrit, and the Other Indo-Aryan Languages. Oxford University Press, 1998.

Singh, Upinder. A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century. Pearson Education India, 2008.

Thakur, Upendra. History of Mithila: From the Earliest Times to 1556 A.D. 2nd ed. Mithila Institute, 1988.

इतिहासक स्रोत आ समीक्षा

मिथिला, वज्जि आ अंगक राजनीतिक इतिहासक
प्रागैतिहासिक स्रोतसँ समकालीन परिवेश धरि
२८ मूल अध्यायक स्वतंत्र आलोचनात्मक अध्ययन।

पुरातत्त्व, पञ्जी, शिलालेख, नदी, राजसत्ता,
भाषा, कला, भूमि-सुधार आ सीमापार समाजक
ऐतिहासिक दाबी आ प्रमाणक सीमा पर विमर्श।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

VIDEHA.CO.IN

GITHUB MIRROR

VIDEHA · VOLUME 33 · 2026